International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 4 March-April 2024

वर्तमान भू–राजनीतिक परिदृश्य में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता

पूनम[1], डॉ. हरेराम सिंह[2]
[1]शोधार्थी, Dept. of political science, Devendra p.g. college Belthara road ballia up, jananayak chandrashekhar University ballia uttar Pradesh
[2]शोध निर्देशक (प्राचार्य), राजनीतिशास्त्र विभाग, देवेन्द्र पी. जी. कालेज, बिल्थरा रोड, बलिया, उ. प्र.
Corresponding Author: - पूनम
Email: aaryapoonam0707@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.11207775

प्रस्तावना :

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का परिदृश्य बिल्कुल ही बदल गया। सम्पूर्ण विश्व वैचारिक आधार पर मुख्यतः दो गुटों में विभाजित हो गया। इस वैचारिक युद्ध के एक छोर पर साम्यवादी सोवियत संघ तो दूसरे छोर पर पूँजीवादी अमेरिका जैसी महाशक्तियाँ मौजूद थी। इन दोनों महाशक्तियों की वैचारिक प्रतिद्वंदिता शीतयुद्ध की घटना के रूप में तब्दील हो गयी, ऐसी स्थिति में दोनों गुटों में वैश्विक स्तर पर महाशक्ति बनने की होड़ शुरू हो गयी और द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त स्वतन्त्र नवोदित देशों को अपने गुट में शामिल करने के लिए दोनों महाशक्तियाँ प्रयासरत् थी और अपने वैचारिक प्रभावों को बनाए रखना चाहती थी। इस पूरे घटनाचक्र का प्रभाव तीसरी दुनिया के राष्ट्र के हितों पर पड़ रहा था, ये नवोदित राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने एवं बनाये रखना चाहते थे, परन्तु शीतयुद्ध में दोनों महाशक्तियों के ध्रुवीकरण से लैटिन अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका एवं एशिया आदि महाद्वीपों के नवोदित राष्ट्रों की सम्प्रभुता, राष्ट्रीय सुरक्षा, शासन व्यवस्था का ढाँचा, विकास आदि क्षेत्रों के भविष्य पर खतरा मंडराने की सम्भावना बढ़ने लगी थी। इस घटनाक्रम से उभरने के लिए तीसरी दुनिया के देशों को एक सख्त संगठन, आन्दोलन एवं नेतृत्व की आवश्यकता थी, जो इन राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सके, साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पहचान को बनाये रख सकें। भारत भी इन्हीं देशों में से एक था। फलतः भारत के तत्कालीन अन्तरिम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति के सन्दर्भ में गुटनिरपेक्षता की अवधारणा को प्रतिपादित किया।

उपनिवेशवाद से स्वतन्त्र हुए इन नवोदित राष्ट्रों ने स्वयं को दोनों गुटों से दूर रहने के लिए, भारत के नेहरू युगोस्लाविया के मार्शल टीटो, मिस्त्र के नासिर, घाना के एन नक्रुमा के नेतृत्व में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना की जो स्वतन्त्र और तटस्थ रहने की मांग कर रहा था। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रूप भाग लेने के लिए एक स्वतन्त्र विदेश नीति का उपकरण है। यह आन्दोलन शीतयुद्ध में एक विकल्प था जिससे नव स्वतन्त्र देशों को अपनी स्वतन्त्रता एवं संप्रभु अधिकारों के प्रयोग करने का अवसर मिला। आरम्भ में यह आन्दोलन मूलरूप से राजनीतिक प्रकृति का था, आगे चलकर इसने आर्थिक समस्याओं पर भी ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया। शीतयुद्ध समाप्त होते ही इसकी प्रासंगिकता पर सवाल उठाया गया कि उत्तर शीतयुद्ध में गुटनिरपेक्षता का क्या भविष्य होगा। वास्तविकता तो यह है कि आज वर्तमान में ऐसी जटिल चुनौतियाँ उभर कर सामने आ रही हैं, जैसे मानवाधिकारों की रक्षा आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, स्थायी वैश्विक शान्ति, संयुक्त राष्ट्र में सुधार, रूस–युक्रेन युद्ध की समाप्ति हेतु प्रयास। इनमें से प्रत्येक की सफलता गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की सक्रियता पर ही निर्भर नजर आती है। जो वर्तमान व भविष्य में इस आन्दोलन के प्रासंगिक होने के प्रमाण है।

मुख्य शब्द – द्वितीय विश्व युद्ध, सोवियत गुट, पश्चिमी गुट, शीतयुद्ध, नवोदित राष्ट्र, गुटनिरपेक्षता, तटस्थता, विदेश नीति, बहुध्रुवीय दुनिया।

परिचय –

गुटनिरपेक्षता ऐतिहासिक रूप से विभाजित शीतयुद्ध गठबन्धनों से दूर विश्व राजनीति में एक स्वतन्त्र रास्ता तलाशने वाले राष्ट्रों के लिए एक सामूहिक आवाज और विश्व को लोकतान्त्रिक बनाने की साझी मांग है, जिसे आज की बहुध्रुवीय दुनिया में नये सिरे से महत्व मिलता है। यह साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं रंगभेद नीति को समाप्त करने का सामूहिक आन्दोलन है। यह आन्दोलन विश्व में एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण की मांग है, जिसमें सम्प्रभुता स्वतन्त्रता और राज्यों के मध्य समानता के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का संचालन हो। स्वतन्त्र और स्वायत्त विदेश नीति का निर्माण, विश्व को शान्तिपूर्ण बनाने और विश्व को गुटों से मुक्त करने का आन्दोलन है। यह पुनरूत्थान मुख्य रूप से नवीनतम भू–राजनीतिक बदलावों की प्रतिक्रिया है, जहाँ राष्ट्र एक बार फिर प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ जुड़ने के दबाव से जूझ रहे हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता के मुद्दे से सम्बन्ध रखता है, शोधकर्ता ने शोध हेतु इस विषय को चुनते हुए शोध के निम्न उद्देश्य बताया है, जो अधोलिखित है–

1. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की भूमिका का अध्ययन करना।
3. शीतयुद्धों परांत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जो परिवर्तन आये उनके मध्य गुटनिरपेक्षता की नीति और उसके बदलते स्वरूप तथा वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

विधि तन्त्र –

इस शोध विषय की प्रकृति व्यावहारिक की अपेक्षा सैद्धान्तिक अधिक है, इसलिए शोधकर्ता ने शोध सामग्री का संकलन करते समय प्राथमिक स्त्रोतों की अपेक्षा द्वितीयक स्त्रोतों से सामग्री अधिक संग्रहीत की है। द्वितीयक आंकड़े एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता इस विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों, समाचार पत्रों, इण्टरनेट आदि से सामग्री ली है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का संक्षिप्त ऐतिहासिक अवलोकन –

पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दुनिया मोटे तौर पर दो प्रतिद्वन्दी शिविरों में विभाजित हो गयी थी। सोवियत शिविर के तहत कम्युनिस्ट राष्ट्र और अमेरिकी शिविर के तहत पूँजीवादी राष्ट्र। अंतरिक्ष अभियानों से लेकर ओलम्पिक खेलों तक, उनकी प्रतिस्पर्द्धा इतनी तीव्र थी कि क्यूबा के मिसाइल संकट के दौरान, एक तीसरा विश्व युद्ध अपरिहार्य लग रहा था। यह शीतयुद्ध का युग था। द्वितीय विश्व के समापन के समय दुनिया के अधिकांश देश अल्पविकसित थे और उन्हें विकास के लिए वैश्विक सहयोग की आवश्कयता थी। यदि यह देश दो महाशक्तियों के विवाद के बीच में फंस जाते तो उन्हें किसी एक पक्ष से आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्राप्त नहीं हो पाती, जिसकी इस समय इन देशों को सबसे ज्यादा आवश्यकता थी। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने यह स्वीकार किया कि जहाँ तक सम्भव होगा इस शक्ति की राजनीति से अलग रहेगें, जो हमें एक–दूसरे के सामने खड़ा कर देती है। जिसने पिछले समय में संसार को युद्ध दिये है और आज भी बड़े विनाशकारी युद्धों को जन्म देने के लिए आगे बढ़ रहे है। वास्तव में उनका विचार एक विश्व की कल्पना को साकार करना था। किसी गुट से बंध जाने से ऐसा करना संभव नहीं था।

वे सब तरह से एक खुशहाल दुनिया चाहते थे। साम्राज्यवाद से भारत की मुक्ति के बाद ऐसी दुनिया में पड़े दूसरे नवोदित राष्ट्रों ने भी अपने को भारत जैसी स्थिति में पाया। अतः वह भी अपनी आजादी व स्वतन्त्र विदेश नीति के लिये एक–दूसरे के निकट आने लगे और सकारात्मक सहयोग व प्रयासों को बढ़ावा दिया जाने लगा। नेहरू जी के बाद श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने यही स्वीकार किया कि ''गुटनिरपेक्षता का मतलब तटस्थता नहीं है क्योंकि हम प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे को उसकी योग्यता के आधार पर आंकने की अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखते हैं, अर्थात् असंलग्नता से हमारा अभिप्राय तटस्थता नहीं है क्योंकि हर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे को उसके गुण–दोष के आधार पर परखने व अपना व्यवहार तय करने के लिए हम स्वतन्त्र है।'' अफ्रीकी राष्ट्रों का भी यही हाल हुआ तथा लैटिन अमेरिकी देशों ने अमेरिकी नीति का विरोध किया। सभी जगह जो मूल कारण था वह अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, एशिया इन देशों पर वर्चस्व प्रधानता की नीति का विरोध करना। क्योंकि यह हमारे लिये कष्टदायी था। धीरे–धीरे हमारी यह विदेश नीति की गति तेज होने लगी। 1947 से इसके मंतव्य साफ दिखायी देने लगे। गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, इसका उद्देश्य अमेरिका और सोवियत संघ द्वारा बनाए गए किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होकर विदेशी मामलों में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को कायम रखना था। गुटनिरपेक्षता न तो उदासीनता थी न ही तटस्थ होना और न ही स्वयं को पृथक रखना था यह एक शक्तिशाली परिकल्पना थी जिसमें किसी भी सैन्य गुट से कोई वचनबद्धता नहीं थी अपितु यह प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय मद्दों पर उसके गुण–दोष के आधार पर स्वतन्त्र राय रखना था। गुटनिरपेक्षता की नीति को विकासशील देशों ने समर्थन दिया, क्योंकि इससे इन देशों को अपनी सम्प्रभुता की रक्षा करने का अवसर मिला और शीतयुद्ध के दौरान अपनी गतिविधियों को संचालित करने की स्वतन्त्रता थी।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को मजबूत बनाने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस परिकल्पना का विकास धीरे–धीरे हुआ। 1947 में नई दिल्ली में एशियाई सम्बन्धों के सम्मेलन को बुलाकर नेहरू ने इसकी पहल की। इसके बाद 1955 में एशिया और अफ्रीका के 29 देशों का सम्मेलन बांडुंग (इण्डोनेशिया) में हुआ यह अपने प्रकार का पहला सम्मेलन था जिसने शान्ति, उपनिवेशवाद से मुक्ति, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक सहयोग की दिशा में साथ–साथ कार्य करने की शपथ ली। अपने स्वागत भाषण में इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो ने कहा कि ''मैं आशा करता हूँ कि यह सम्मेलन इस तत्व का साक्ष्य होगा कि एशिया व अफ्रीका का जन्म हुआ है।'' इस सम्मेलन में गुटनिरपेक्षता की ओर पहला अहम कदम उठाया गया, जिसमें भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, अब्दुल नासिर, सुकर्णों और मार्शल टीटों जैसे नेताओं ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन में विश्व शान्ति और सहयोग संवर्द्धन सम्बन्धी घोषणा पत्र जारी किया गया। इस सम्मेलन में जिस बिन्दुओं पर सहमति व्यक्त की गयी वे साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का खण्डन, जातीय भेदभाव की निन्दा, निःशस्त्रीकरण अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्ण तरीकों से समाधान तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के समर्थन आदि थे। यह कह सकते हैं कि जब द्वितीय विश्व युद्धोपरान्त एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका तथा दुनिया के दूसरे देशों में शीतयुद्ध अपने चरम पर पहुँच गया तो अपनी आजादी, स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीय हितों की रक्षार्थ इस दिशा में बढ़ना आवश्यक हो गया था। इस दृष्टि से गुटनिरपेक्ष देशों ने विश्व शान्ति व सुरक्षा के आधार तैयार करने में और मुहिम को अंजाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

गुटनिरपेक्ष नीति भारत को विश्व की देन है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत के प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने जिस विदेश नीति की घोषणा की थी वही नीति आगे चलकर गुटनिरपेक्ष की नीति के रूप में विकसित हुई। 1961 में बेलग्रेड में भारतीय प्रधानमंत्री पं0 नेहरू ने मिस्त्र के राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर इण्डोनिशिया के राष्ट्रपति सुकर्णों और युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटों तथा अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव रखी। इसे गुटनिरपेक्ष आनदोलन का प्रथम शिखर सम्मेलन माना गया जिसने शीतयुद्ध की गुटीय राजनीति का विकल्प प्रस्तुत किया तथा नव स्वतन्त्र देशों को अपने स्वतन्त्र और संप्रभु अधिकारों के प्रयोग करने का साहस दिया। यह आन्दोलन शीत युद्ध के सन्दर्भ में एक स्वतन्त्र और सम्प्रभु अधिकारों के प्रयोग का साहस दिया।

यह आन्दोलन शीतयुद्ध के सन्दर्भ में एक विकल्प था। जिससे नव स्वतन्त्र देशों को अपनी स्वतन्त्रता एवं संप्रभु अधिकारों के प्रयोग करने का अवसर मिला। गुटनिरपेक्षता का मुख्य शिल्पी होने और गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का अग्रणी सदस्य होने के कारण भारत ने इसके विकास में एक सक्रिय भूमिका निभायी। भारत के प्रयासों से ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, विश्व आन्दोलन में परिणत हुआ। दासता से मुक्त हुए भारत सहित सभी नव–स्वतन्त्र राष्ट्रों

के लिए इस आन्दोलन ने एक नवीन मार्ग प्रशस्त किया। इस नीति का अवलम्बन करके नव–स्वतन्त्र राष्ट्र अपने लिए विकास के नए आयाम खोल पाए। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय विवादों में सही गलत के आधार पर निर्णय लेने के लिए एक तीसरे मंच का अविर्भाव भी हुआ।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के उद्देश्य –

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के उद्देश्यों को निम्नांकित बिन्दुओं में व्यक्त किया जा सकता है–

1. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् नवोदित तीसरी दुनिया अर्थात् एशिया लैटिन अमेरिका व अफ्रीका महाद्वीप के नवोदित राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना।
2. शीत युद्ध की राजनीति का त्याग करना और स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अनुसरण करना।
3. स्वतन्त्र विदेश नीति को अपनाते हुए गुटों की राजनीति से दूर रहना।
4. साम्राज्यवाद–उपनिवेशवाद का विरोध तथा स्वतन्त्रता के लिए प्रयासरत् देशों के आन्दोलन को समर्थन देना।
5. संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका और प्रभाव में मजबूती लाने के लिए सहयोग देना।
6. शीतयुद्ध का विरोध करते हुए आपस में शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व और सहयोग को बढ़ावा देना।
7. रंगभेद की नीति के विरूद्ध संघर्ष की शुरूआत करना और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए यथासंभव प्रयास करना।
8. वर्चस्व/प्रभाव की भावना पर आधारित द्विध्रुवीय व्यवस्था के स्थान पर बहुध्रुवीय व्यवस्था के सिद्धान्तों पर आधारित नई विश्व–व्यवस्था की स्थापना करना।

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की भूमिका :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत की विदेश नीति स्वतन्त्र दृष्टिकोण और गुटनिरपेक्षता की रही है। इसका ध्येय–विश्व शान्ति को बनाये रखना, युद्ध की सम्भावनाओं को टालना, विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान, जातिभेद, रंगभेद और साम्राज्यवाद का विरोध करना तथा राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है। भारत की विदेश नीति के सम्बन्ध में पं0 जवाहर लाल नेहरू ने सितम्बर 1946 में कहा था कि ''भारत वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में एक स्वतन्त्र नीति का अनुसरण करेगा और गुटों की खींचतान से दूर रहते हुए विश्व के समस्त पराधीन देशों के लिए आत्म–निर्णय का अधिकार प्रदान करने का प्रयास करेगा। साथ ही वह विश्व के अन्य स्वतन्त्रता प्रेमी और शान्तिप्रिय राष्ट्रों के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावनाओं के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा।''

जवाहर लाल नेहरू को भारतीय विदेश नीति का सूत्रधार कहा जा सकता है। क्योंकि वे स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होने के साथ–साथ प्रथम विदेश मंत्री भी थे। सरकार और पार्टी में उनके साथियों ने विदेश नीति के निर्माण और संचालन का दायित्व उनके ही कन्धों पर डालना ठीक समझा क्योंकि स्वतन्त्रता से पूर्व भी नेहरू कांग्रेस तथा शेष विश्व के बीच कड़ी का कार्य कर रहे थे।

वर्ष 1961 में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना में पं0 नेहरू की भूमिका अग्रणी थी। नेहरू ने गुटनिरपेक्षता को तीसरा गुट नहीं, बल्कि शान्ति का गुट कहा। इसलिए उन्होंने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में शान्ति व निःशस्त्रीकरण पर मूल बल प्रदान किया। इनके अनुसार गुटनिरपेक्ष महाशक्तियों का विरोध नहीं अपितु स्वतन्त्रता के विस्तार की मांग है। शीतयुद्ध के काल खण्ड में दो शक्तिशाली देशो के बीच दुनिया में भारत के सामने मुख्य चुनौती के रूप में उसकी सम्प्रभुता की रक्षा, अपने अर्थतन्त्र को मजबूत करना, एक राष्ट्र के रूप में अपनी गरिमा को बनाये रखना तथा एशिया व अफ्रीका महाद्वीप के नए स्वतन्त्र देशों में एक अगुआ के भूमिका में स्वयं को सार्थक सिद्ध करने के रूप में महत्वपूर्ण बिन्दु थे।

भारत की विदेश नीति का यह पहला चरण 1947 में देश के आजादी के साथ प्रारम्भ होकर 1962 तक चला। यह चरण आशावादी गुटनिरपेक्षता का था। जिसका भारत–चीन युद्ध के साथ अन्त हो गया।

नेहरू की इस विदेश नीति की दो प्रमुख विशेषताएं थी– प्रथम–विश्व शान्ति की स्थापना के लिए प्रयत्न करना और द्वितीय–अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतन्त्र दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करना।

नेहरू के पश्चात् गुटनिरपेक्ष विदेश नीति –

सन् 1962 से 1971 तक भारत की विदेश नीति का दूसरा चरण चला जिसे हम यथार्थवाद एवं सुधारों का चरण कह सकते हैं। 1962 के चीन युद्ध के बाद भारत ने सुरक्षा और राजनीतिक चुनौतियों पर व्यावहारिक विकल्प बनाए। इसने राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में गुटनिरपेक्षता से परे देखा, 1964 में अमेरिका के साथ एक रक्षा समझौता किया। भारत को कश्मीर पर अमेरिका और ब्रिटेन के बाहरी दबाव (ताशकंद समझौता 1965) का सामना करना पड़ा। इसलिए भारत का झुकाव सोवियत संघ की तरफ होने लगा। तमाम राजनैतिक स्थिरता एवं क्षीण अर्थव्यवस्था के साथ जैसे–तैसे भारत ने इस दौर को पार किया।

सन् 1971 से 1991 तक भारत की विदेश नीति का तीसरा चरण 20 वर्ष के लम्बे काल खण्ड तक चला। भारत ने 1971 में यूएसएसआर के साथ मैत्री संधि की तथा 1971 में ही भारत ने, भारत–पाकिस्तान युद्ध में बांग्लादेश को मुक्त कराने के लिए कठोर शक्ति का उल्लेखनीय उपयोग किया। इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में गुटनिरपेक्ष विदेश नीति बनाये रखने के बावजूद राष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सम्प्रभुता के मुद्दों पर मुख्य बल दिया गया। इस दशक में श्रीमती गांधी ने अंगोला व मोजांबिक में उपनिवेशवादी विरोधी आन्दोलन का समर्थन किया तथा जिम्बाम्बे की अल्पमत सरकार का विरोध व रंगभेद नीति की आलोचना की गयी और भारत ने फिलिस्तीन मुद्दे पर अपना स्पष्ट समर्थन किया। 1974 (पोखरण–I) में शान्तिपूर्ण परमाणु विस्फोट परीक्षण करने के बाद भारत को अमेरिका और उसके सहयोगियों से प्रतिबन्धों का भी सामना करना पड़ा।

वर्ष 1976 में कोलम्बो सम्मेलन में भारत ने 'तीसरी दुनिया के बैंक' के निर्माण का प्रस्ताव रखा, जिसके द्वारा विकासशील देशों को आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव था। इसके साथ ही इन्दिरा गांधी ने पड़ोंसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित कर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को नई दिशा दी। इसी दौरान उसने हिन्द महासागर को हमेशा के लिए शान्ति का क्षेत्र घोषित कराकर विश्व–शान्ति की दिशा में महान कदम उठाया।

वर्ष 1977 में जनता पार्टी सरकार ने वास्तविक गुटनिरपेक्षता का नारा दिया। जनता पार्टी के अनुसार, भारतीय विदेश नीति का झुकाव साम्यवाद के पक्ष में था तथा जनता पार्टी ने दोनों महाशक्तियों के साथ समान रूप

में मित्रता पूर्ण सम्बन्ध बनाने का प्रयास किया। अमेरिका के साथ सम्बन्धों को बेहतर करने पर बल प्रदान किया। परन्तु क्षेत्रीय व वैश्विक परिस्थितियों के कारण भारत और अमेरिका के मध्य दूरी बनी रही।

गुटनिरपेक्ष देशों का 7वाँ शिखर सम्मेलन 1982 में बगदाद में आयोजित होने वाला था, परन्तु ईरान एवं ईराक के मध्य युद्ध के कारण मार्च 1983 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया। भारत इस सम्मेलन में ''नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था'' (NIEO) का प्रभावी रूप में समर्थन किया। इन्दिरा गांधी ने कहा कि विकास निःशस्त्रीकरण और स्वतन्त्रता एक दूसरे से जटिल रूप में अर्न्तसम्बन्धित है। इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के लोकतान्त्रिकरण पर भी बल दिया। इनके अनुसार, कोई पहली, दूसरी या तीसरी नहीं है, बल्कि पूरा विश्व एक है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के 8वें शिखर सम्मेलन हरारे (1986) में भारत के प्रयासों से रंगभेद नीति के विरूद्ध संघर्ष के लिए ''दक्षिण एकता कोष'' की स्थापना की गयी। 9वें शिखर सम्मेलन बेलग्रेड (1989) में भारत के ही प्रयासों से 'पर्यावरण संरक्षण हेतु/'धरती रक्षा कोष' की स्थापना की गयी। 1991 के दौरान आर्थिक संकट और विदेश नीति के साथ–साथ घरेलू नीतियों को भी गम्भीरता से निरीक्षण करने एवं सार्थक सुधार करने की आवश्यकता महसूस हुई।

देश की विदेश नीति का चौथा चरण 1991 से लेकर 1998 (सामरिक स्वायत्तता की सुरक्षा) तक चला जिसमें रणनीतिक और कूटनीतिक नीतियों के साथ–साथ अब देश को आगे बढ़ने के लिए आर्थिक–नीतियों का भी समावेशन करना पड़ा। भारत ने 10वें जकार्ता सम्मेलन (1992) में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को बनाए रखते हुए बल दिया और कहा कि एक ध्रुवीय विश्व में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की और अधिक आवश्यकता है। इस दौर में भारत ने आर्थिक एवं कूटनीतिक क्षेत्रों में अपने आपको बहुत तेजी से स्थापित किया। 11वें शिखर सम्मेलन (1995) में भारत ने सक्रिय एवं सकारात्मक भूमिका अदा की तथा आतंकवाद की समाप्ति, संयुक्त राष्ट्र में सुधार आदि का प्रस्ताव रखा। यह वह अवधि है जब भारत ने अमेरिका, इजराइल ओर आसियान देशों के साथ गहनता से जुड़ने की कोशिश की। अमेरिका के साथ अपने सम्बन्धों को सुधारने के क्रम में 1998 में भारत ने अपना दूसरा नाभिकीय परीक्षण किया।

इसके बाद भारतीय विदेश नीति का पांचवाँ चरण (1998 से 2013) भारत, एक सन्तुलनकारी शक्ति के रूप में उभरा। इस दौर में भारत की प्रासंगिकता पूरे विश्व में बहुत तेजी से बढ़ी। यह भारत के लिए संभावनाओं का वह दौर था जिसमें भारत का प्रभाव वैश्विक स्तर पर बढ़ता रहा। डरबन (1998), क्वालालंपुर (2003) हवाना (2006) शर्म अल–शेख (2009), तेहरान शिखर सम्मेलन (2012) में लगातार गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता पर बल प्रदान किया गया। 2013 से वर्तमान तक भारत की विदेश नीति का छठा चरण संक्रमणकालीन भू–राजनीति का है इस चरण में भारत ने वेनेजुएला (2016), अजरबैजान (2019) शिखर सम्मेलन में आतंकवाद का विरोध, संयुक्त राष्ट्र में सुधार, सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति तथा कंपाला (2024) शिखर सम्मेलन में वैश्विक मंच पर शान्ति, विकास और सहयोग को बढ़ावा देने पर जोर दिया है। इस अवधि में भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति बहुसंरेखण में बदल गयी है, भारत अब दुनिया की प्रमुख व्यवस्थाओं में से एक है।

वैश्विक परिदृश्य में रूस–यूक्रेन युद्ध (2022) हो या श्रीलंका का दिवालियापन (मई 2022) होने का संकट हो या संयुक्त राष्ट्र के 77वें अधिवेशन में भारत की सुरक्षा परिषद में दावेदारी साफ दिखाई देती है। जिस तरीके से भारत ने बातचीत के जरिए रूस–युक्रेन टकराव को खत्म करने की अपील की और किसी पक्ष का हिस्सा बनने से मना करते हुए अपने हितों को प्राथमिकता दी इससे यह साफ हो गया है कि देश एक नई ऊर्जा व विश्वास के साथ वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, साथ ही अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति का अनुसरण भी कर रहा है।

कोविड–19 के पश्चात् पूरी दुनिया में आमूल–चूल परिवर्तन हुये हैं, और भारत उनकी अगुवाई कर रहा है। साथ ही गलवान विवाद के बाद चीन के साथ सम्बन्धों की ओर आजमाइश में भारत ने कड़ा रूख अपनाकर अपनी मंशा जाहिर कर दी है। भारत आज भी पंचशील में विश्वास करता है लेकिन चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है हमारी विदेश नीति का प्राथमिक एवं प्रमुख लक्ष्य अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित एवं सुदृढ़ रखना है।

वर्तमान की भारतीय विदेश नीति अपने उच्चतम सामर्थ्य तीव्र महत्वाकांक्षाओं एवं जिम्मेदारी की श्रेष्ठ भावनाओं के साथ विश्व मंच पर डटी हुई है। भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है। डोकलाम में भारत की कार्यवाही और वर्ष 2018 पुलवामा आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ बालाकोट में जोरदार सर्जिकल स्ट्राइक, बदलती भारतीय विदेश नीति का एक प्रमुख उदाहरण है। इस प्रकार भारत ने 21वीं सदी में वैश्विक परिस्थितियों के अनुकूल अपनी विदेश नीति में परिवर्तन करने का प्रयास किया है और वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति बन कर उभरा है।

शीतयुद्धोंपरान्त गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता :

1990 के दशक में सोवियत संघ के पतन और शीतयुद्ध के समापन के साथ, दुनिया बहुत बदल गयी। इस दशक में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आये बदलाव ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता के प्रश्न को एक प्रमुख मुद्दा बना दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की नई महाशक्ति के रूप में उभरा और दुनिया द्विध्रुवीय से एक–ध्रुवीय हो गयी। दुनिया में तेजी से तकनीकी ओर वैज्ञानिक विकास हुआ। साम्यवादी विचारधारा में गिरावट के कारण पूँजीवादी विचारधारा को बल मिला और अधिकतर देश आर्थिक विकास के लिए पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाने लगे। भारत ने एलपीजी अर्थात उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण की व्यवस्था को अपनाया, जिसके बाद भारत ने तेजी से आर्थिक विकास किया। वैश्विक अर्थव्यवस्था के इस एकीकरण ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन से जुड़े समर्थकों बुद्धिजीवियों एवं आलोचकों के बीच गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता का मुद्दा बेहद चर्चा का विषय रहा। जो लोग इसके विरोध में थे उनका मानना था कि अब शीतयुद्ध खत्म हो चुका है, इसलिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को समाप्त कर देना चाहिए।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में युगोस्लाविया और मिस्त्र ने इसकी प्रासंगिकता पर सवाल उठाया। यह बिन्दु उल्लेखनीय है कि ये दोनों देश गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के संस्थापक तथा इसके अध्यक्ष रह चुके थे। वर्ष 1991 की गुटनिरपेक्ष विदेश मन्त्रियों की बैठक में यूगोस्लाविया ने गुटनिरपेक्षता के नाम को परिवर्तित करने का प्रस्ताव रखा।

मिस्त्र ने तो यहाँ तक कहा कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का विलय जी–77 में हो जाना चाहिए। एम0एस0 राजन के अनुसार कुछ लोगों ने गुटनिरपेक्षता की प्रांसगिकता पर शुरू से ही प्रश्न उठाया इसलिए यह कोई नवीन प्रवृत्ति नहीं है। जो लोग इस आन्दोलन के पक्ष में थे उनका कहना था कि भले ही शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, परन्तु तीसरी दुनिया के विकासशील देशों की गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, अशिक्षा, आर्थिक विकास राष्ट्रीय सुरक्षा, आन्तरिक अशान्ति जैसी प्रमुख समस्यायें बनी हुई है, इनका समाधान भविष्य में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से ही संभव है, इसी कारण गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को यथावत रहने दिया जाए, यह आन्दोलन जैसे–जैसे आगे बढ़ा इसके सम्मुख कई नई चुनौतियाँ आयीं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य देशों के समक्ष अनेक नई और गतिशील चुनौतियाँ समाने हैं, जो शीतयुद्ध के दौरान सामना की गयी चुनौतियों से बिल्कुल अलग है। इस तरह की चुनौतियों में जलवायु परिवर्तन और इसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद, शरणार्थी संकट आदि शामिल है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए विश्व समुदाय का अधिक ध्यान, संसाधन, एकीकरण और प्रासंगिकता की आवश्यकता है। इसके लिए विश्व के सभी देशों के साथ मिलकर काम करना होगा, विशेषकर विकसित देशों को इसके लिए अपने तकनीकी और आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराने होगे। चूँकि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में जो देश शामिल हैं वह विकसित देशों की तुलना में तकनीकी और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं इस संदर्भ में देखा जाए तो गुटनिरपेक्ष आन्दोलन इन चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम प्रतीत होता है।

वर्तमान प्रासंगिकता के संदर्भ में सिद्धान्तों को बढ़ावा देने के लिए यह आन्दोलन बहुत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है जो सुनिश्चित करता है :

- विश्व शान्ति बनाये रखना।
- दक्षिण–दक्षिण राष्ट्र के बीच सहयेाग को बढ़ावा देना।
- क्षेत्रीय अखंण्डता और संप्रभुता का संरक्षण करना।
- समतामूलक विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक विविधता और लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ाना।
- सतत् विकास की अवधारणा का समर्थन करने के लिए और दुनिया को स्थिरता की ओर ले जा सकता है।
- उच्च सहयोग और सतत आर्थिक विकास।
- पश्चिमी आधिपत्य के विरूद्ध तीसरी दुनिया के देशों के रक्षक के रूप में काम करना।
- आतंकवाद और अन्य अवैध गतिविधियों आदि से निपटना।
- संयुक्त राष्ट्र के लोकतन्त्रीकरण हेतु प्रयास करना।

गुटनिरपेक्ष विदेश नीति स्वतन्त्र व स्वायत्त विदेश नीति का पर्याय है यह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। गुटनिरपेक्षता आधारित विदेश नीति ही वर्तमान विश्व व्यवस्था के लोकतंत्रीकरण हेतु दबावपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है जिससे समानता पर आधारित विश्व–व्यवस्था का निर्माण हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक एवं अन्य प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का अधिकाधिक लोकतन्त्रीकरण किया जाय, ताकि इन संस्थाओं पर अमेरिका सहित अन्य विकसित राष्ट्रों की वर्चस्वता को कम किया जा सके, ऐसा गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अपने 120 पूर्णकालिक सदस्यों एवं 17 पर्यवेक्षक देशों और 10 पर्यवेक्षक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों एवं अतिथियों की विशाल सदस्य संख्या के आधार पर करता है और इस हेतु भारत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

वर्तमान समय में भारत द्वारा अपनायी जाने वाली स्वायत्त एवं स्वतन्त्र विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता–2 कहा गया है। इसमें 21वीं सदी में अपनाए जाने वाले आधारभूत सिद्धान्तों, रणनीतियों का उल्लेख किया गया है, इसके अन्तर्गत तीन प्रमुख बातें सन्निहित हैं।

प्रथम– भारत विचारधारा तथा उद्देश्यों से अपने राष्ट्रीय हितों को सीमित नहीं करेगा।

द्वितीय– भारत अधिकतम रणनीतिक स्वायत्तता अर्जित करते हुए अपने विकास लक्ष्यों को प्राप्त करेगा।

तृतीय– एक समतामूलक विश्व व्यवस्था के निर्माण का प्रयास करेगा।

गुटनिरपेक्षता–2 रणनीतिक व स्वायत्तता पर जोर देते हुए महाशक्तियों के साथ–साथ पड़ोसी देशों से विशेष सम्बन्धों पर बल देती है, साथ ही यह भारत की घरेलू नीतियों और विदेश नीति पर सह–सम्बन्ध बनाने पर जोर देती है तथा प्रयास करती है कि विदेश नीति कैसे राष्ट्रीय विकास में सहायक हो सकती है? गुटनिरपेक्षता–2 में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि सामरिक स्वायत्तता गुटनिरपेक्ष विदेश नीति का मूल आधार है। गुटनिरपेक्षता का महत्व आन्दोलन के रूप में समाप्त हो सकता है, क्योंकि आरम्भ में गुटनिरपेक्षता को साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन के रूप में चित्रित किया गया था, परन्तु स्वतन्त्र विदेश नीति के रूप में इसका महत्व हमेशा बना रहेगा।

निष्कर्ष–

शीतयुद्धोत्तर काल में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता पर विचार कर गुटनिरपेक्षता के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्षत आन्दोलन की भूमिका में निश्चित रूप से कमी आयी विशेषकर राजनीतिक सन्दर्भ में परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि बदलते परिवेश में इस आन्दोलन ने अपनी प्रासंगिकता खो दी है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रों के स्वतन्त्र नीति के समक्ष चुनौतियों तथा अमेरिका, रूस और चीन जैसी प्रमुख शक्तियों के बीच गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा है। जैसे–जैसे वैश्विक गतिशीलता बहुध्रुवीयता युग की ओर बढ़ रही है, इन शक्तियों के बीच पक्ष न चुनने का आन्दोलन का सिद्धान्त तेजी से प्रासंगिक हो गया है। जैसे मिस्त्र सहित कई गुटनिरपेक्ष देशों ने युक्रेन–रूस युद्ध जैसे संघर्षों में निश्चित रूख अपनाने में अनिच्छा दिखायी है, जो महान शक्ति प्रतिद्वन्दिता के सामने तटस्थता बनाये रखने की व्यापक प्रवृत्ति को दर्शाता है।

समकालीन संदर्भ में तटस्थता और गुटनिरपेक्षता की अवधारणाओं को पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है खासकर जब आक्रामक युद्धों को गैर–कानूनी घोषित कर दिया गया हो। यूक्रेन–रूस के आक्रमण ने उभरते भू–राजनीतिक रूझानों को बढ़ावा दिया है, जो महान शक्ति प्रतिस्पर्द्धा के उदय को तीव्रता के साथ मेल खाते

भू–राजनीतिक ताकत के रूप में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को फिर से उभरना शायद सबसे प्रमुख उदाहरण है।

आज भारत, इंडोनेशिया और दक्षिण अफ्रीका जैसे प्रभावशाली देशों सहित 120 सदस्यों वाला गुटनिरपेक्ष आन्दोलन वास्तविक राजनीति और महान शक्ति प्रतिद्वन्दिता के प्रभुत्व वाले विश्व में शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व के अपने मूल सिद्धान्तों के महत्व को रेखांकित कर यह आन्दोलन इस बहुध्रुवीय दुनिया में नए सिरे से प्रासंगिकता प्राप्त कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1- नेहरू जवाहर लाल ''इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, सेलेक्टेड स्पीचीज'' सितम्बर 1949–1961 नई दिल्ली, 1961 पृष्ठ संख्या–24
2- मिश्रा के0 पी0 ''गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : भारत की अध्यक्षता'' लांयर्स बुक्स, नई दिल्ली 1987 पृष्ठ संख्या 4
3- सिंह हरिजय ''भारत और गुटनिरपेक्ष विश्व विकास'' पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1983 पृष्ठ सं0 07
4- यादव आर0 एस0 ''भारत की विदेश नीति'' पीयर्सन दिल्ली 2013 पृष्ठ संख्या–18
5- पंत पुष्पेश ''21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' मैकग्राहिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली 2014
6- नारायण एम0 के0 ''गुटनिरपेक्षता से बहुसंरेखण'' द हिन्दु 05 जनवरी 2016
7- घई यू0 आर0 ''भारतीय विदेश नीति'' जालन्धर–2004 पृष्ठ संख्या 80–81
8- डॉ0 सिंह बी गहलोत ''भारतीय विदेश नीति'' अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली 2016 पृष्ठ संख्या–71
9- टाइम्स ऑफ इण्डिया जनवरी–2017
10- जाट सोहन लाल ''21वी सदी में भारतीय विदेश नीति : परिवर्तन एवं चुनौतियाँ'' वैल्यूम–05 अप्रैल–जून–2023 पृष्ठ संख्या 169–170
11- अग्निदेव ''गुटनिरपेक्षता उद्देश्य विशेषताएँ एवं प्रासंगिकता'' वैल्यूम–06 आईएसएसयूई (पार्ट–2) मार्च 2019 पृष्ठ संख्या–59–60
12- डॉ0 त्रिपाठी कुमार सुशील ''21वी शताब्दी में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता'' वैल्यूम–04 आईएसएस–1 ए27 जनवरी–मार्च 2017 पृष्ठ संख्या–254–255
13- डॉ0 जायसवाल संध्या ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुटनिरपेक्षता का औचित्य'' वैल्यूम–03 आईएसएसयूई–03 मई–2018 पृष्ठ संख्या–46–50
14- इंडिया टूडे, नई दिल्ली मार्च 2022
15- द हिन्दु, नई दिल्ली मार्च 2023
16- www.drishtiias. com.
17- www.orfonline.org.
18- www.usip.org.